- मच्चु सुत्तं-

अनिमित्तमनञ्ञात, मच्चानं इध जीवितं ।
कसिरं च परित्तं च, तं च दुक्खेन संञ्ञुतं ॥१ ॥
न हि सो उपक्कमो अत्थि, येन जाता न मिय्यरे ।
जरऽम्पि पत्वा मरणं, एवं धम्मा हि पाणिनो ॥२ ॥
फलानमिव पक्कानं, पातो पतनतो भयं ।
एवं जातानं मच्चानं, निच्चं मरणतो भयं ॥३ ॥
यथा'पि कुम्भकारस्स, कता मत्तिकभाजना ।
सब्बे भेदनपरियन्ता, एवं मच्चान जीवितं ॥४ ॥
दहरा च महन्ता च, ये बाला ये च पण्डिता ।
सब्बे मच्चुवसं यन्ति, सब्बे मच्चुपरायणा ॥५ ॥
तेसं मच्चुपरेतानं, गच्छत परलोकतो ।
न पिता तायते पुत्तं, ञाति वा पन ञातके ॥६ ॥
पेक्खतं येव ञातीनं पस्स लालपतं पुथु ।
एवमेको व मच्चानं, गोवज्झो विय निय्यति ॥७ ॥

एवमब्भाहतो लोको, मच्चुना च जराय च ।
तस्मा धीरा न सोचन्ति, विदित्वा लोकपरियायं ॥८ ॥
यस्स मग्गं न जानासि, आगतस्स गतस्स वा ।
उभो अन्ते असम्पस्सं, निरत्थं परिदेवसि ॥९ ॥
परिदेवयमानो चे, कञ्चिदत्थं उदब्बहे ।
सम्मूळ्हो हिंसमत्तानं, कयिरा चेनं विचक्खणो ॥१० ॥
न हि रूण्णेन सोकेन, सन्तिं पप्पोति चेतसो ।
भिय्यस्सुप्पज्जते दुक्खं, सरीरं चुपहञ्ञति ॥११ ॥
किसो विवण्णो भवति, हिंसमत्तानमत्तना ।
न तेन पेता पालेन्ति, निरत्था परिदेवना ॥१२ ॥
सोकमप्पजहं जन्तु, भिय्यो दुक्खं निगच्छति ।
अनुत्थुनन्तो कालकतं सोकस्स वसमन्वगू ॥१३ ॥
अञ्ञा' पि पस्स गमिने, यथा कम्मूपगे नरे ।
मच्चुनो वसमागम्म, फन्दन्ते चिध पाणिनो ॥१४ ॥
येन येन हि पञ्ञन्ति, ततो तं होति अञ्ञथा ।
एतादिसो विनाभावो, पस्स लोकस्स परियायं ॥१५ ॥

अपि वस्ससतं जीवे, भिय्यो वा पन मानवो ।
ञातिसङ्घा विना होति, जहाति इध जीवितं ॥१६॥
तस्मा अरहतो सुत्वा, विनेय्य परिदेवितं ।
पेतं कलाकतं दिस्वा, न सो लब्भा मया इति ॥१७॥
यथा सरणमादित्तं, वारिना परिनिब्बये ।
एवम्पि धीरो सप्पञ्ञो, पण्डितो कुसलो नरो ।
खिप्पमुप्पतितं सोकं, वातो तूलं' व धंसये ॥१८॥
परिदेवं पजप्पं च, दोमनस्सं च अत्तनो ।
अत्तनो सुखमेसानो, अब्बहे सल्लमत्तनो ॥१९॥
अब्बूळ्हसल्लो असितो, सन्तिं पप्पुय्य चेतसो ।
सब्बसोकअतिक्कन्तो, असोको होति निब्बुतो' ति ॥२०॥

सल्लसूत्र

(जीवन की अनित्यता। तृष्णा के प्रहाण और मुक्ति का मार्ग।)

यहाँ मनुष्यों का जीवन अनिमित्त और अज्ञात है, कठिन और अल्प है और वह भी दु:ख से युक्त है ॥१॥

ऐसा कोई उपक्रम नहीं है जिससे कि जन्मे हुये लोग न मरें। बुढापा प्राप्त करके भी मरना होता है। प्राणियों का ऐसा ही स्वभाव है ॥२॥

जैसे पके हुए फलों को प्रात: गिरने का भय होता है, वैसे ही जन्म लिए हुए प्राणियों को नित्य मृत्यु से भय लगा रहता है ॥३॥

जैसे कुम्हार द्वारा बनाये मिट्टी के बर्तन सभी टूट जाने वाले हैं, ऐसा हि प्राणियों का जीवन है ॥४॥

तरूण, बडे, बच्चे और बुद्धिमान् सभी मृत्यु के वश में चले जाते हैं। सभी मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं ॥५॥

उन मृत्यु के अधीन रहने वालों के परलोक जाते समय न तो पिता पुत्र की रक्षा करता है और न तो भाई-बन्धु भाई-बन्धुओं की ॥६॥

भाई-बन्धुओं के देखते हुए ही, नाना प्रकार के विलाप को देखते हुए भी मृत्यु अकेले ही प्राणियों को बध करने वाली गौ की भांति ले जाती है ॥७॥

इस प्रकार यह लोक मृत्यु और बुढापे से पीडित हैं; इसलिए धीर पुरूष संसार के स्वभाव को जानकर शोक नहीं करते हैं ॥८ ॥

जिसके आने और जाने के मार्ग को नहीं जानते हो, दोनों अन्तों को न देखते हुए व्यर्थ में विलाप कर रहे हो ॥९ ॥

यदि विलाप करते हुए कुछ भी अपना भला कर सके तो बुद्धिमान व्यक्ति भी अपने को पीडित करता हुआ वैसा करें ॥१० ॥

किन्तु रोने और शोक करने से चित्त को शान्ति नहीं प्राप्त होती, प्रत्युत अधिक दुःख ही उत्पन्न होता है और शरीर पीडित होता है ॥११ ॥

अपने आपको पीडित करते हुए व्यक्ति कृश और कुरुप हो जाता है । उससे प्रेत्यों का पालन नहीं होता । विलाप करना निरर्थक है ॥१२ ॥

जो व्यक्ति शोक को नहीं छोडता है, वह अत्याधिक दुःख को प्राप्त होता है, मरे हुए व्यक्ति के लिए पश्चाताप करते हुए शोक के ही वश में पड जाता है ॥१३ ॥

अपने कर्मानुसार अन्य भी मर कर जाने वाले मनुष्यों और मृत्यु के वश में पडकर यहाँ छटपटाते हुए प्राणियों को देखो ॥१४ ॥

मनुष्य जिस-जिस बात को अच्छा समझता है; वह उससे भिन्न हो जाती है । इस प्रकार के वियोग और लोक के स्वभाव को देखो ॥१५ ॥

यदि मनुष्य सौ वर्ष या उससे अधिक जीवित रहे तो भी वह भाई-बन्धुओं से अलग हो जाता है , और यहाँ जीवन को छोड देता है ॥१६ ॥

इसलिए अर्हत् के उपदेश को सुनकर विलाप करना छोड मरे हुए प्रेत्य व्यक्ति को देखकर सोचे कि अब वह मुझे फिर नहीं मिल सकता ॥१७ ॥

जिस प्रकार आग लगे घर को पानी से बुझाये, ऐसे ही धीर, प्रज्ञावान् बुद्धिमान और कुशल नर उत्पन्न शोक को शीघ्र ही उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे कि वायु रूई को उड़ा ले जाय ॥१८ ॥

अपना सुख चाहने वाला मनुष्य शल्य रूपी रोना, विलाप करना और मानसिक दु:ख को निकाल दे ॥१९ ॥

जो शल्य रहित है, अनासक्त है और चित्त-शान्ति को प्राप्त है, वह सब शोक से परे हो, शोक-रहित हो शान्त होता है ॥२० ॥